IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय नारी समाज की समस्याएँ और समाधान संबंधी स्वामी विवेकांनद के विचार

Dr. Ranjana Nath
Kishanganj

भारतीय नारी समाज के संबंध में स्वामी विवेकानन्द का चिंतन आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना उनके जीवनकाल में था। उन्होंने काफी जागरूक होकर इस विषय में अपने विचार रखे। उन्होंने स्वयं आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया था। लेकिन वे यह मानते थे कि समाज में नर एवं नारी की एक समान उन्नति में ही देष की सर्वांगीण उन्नति निहित होती है। तत्कालीन भारतीय समाज में स्त्रियों की दुर्दषा देखकर वे बहुत व्यथित होते थे और इसीलिए उनको पीड़ा मुक्त करने हेतु उन्होंने उदान्त स्वर में सबको आह्वान किया था।

स्वामीजी का बचपन बंगाल के समाज–सुधार आंदोलन के समय बीता था। राजा राममोहन राय ने सतीप्रथा के विरूध आंदोलन किया था। ईष्वर चन्द्र विद्यासागर ने बाल–विवाह की प्रथा को समाप्त करने में, विधवस–विवाह एवं स्त्री–षिक्षा संबंधी आंदोलन में विषेष भूमिका निभाई थी। इन आंदोलनों के केन्द्र में था–उपेक्षित और अत्याचारित नारी–समाज। स्वामी विवेकानन्द के किषोर हदय में निस्संदेत इसका गहरा प्रभाव पड़ा था।

स्वामीजी स्वतंत्र प्रकृति के सुधारक थे।[1] उनकी सोच यह थी कि कानून बनाकर समाज सुधार के आदर्षों को लोगों के ऊपर लाद देने मात्र से इसका प्रभाव दीर्घस्थायी नहीं होगा। वे सुधारों को इस तरह कार्यान्वित करना चाहते थे जो लोगों के हदय की गहराइयो में उतर जाए अर्थात् लोग जिनका सच्चे हदय से स्वागत करे। वे सुषिक्षा के पक्षधर थे। वे मानते थे कि पाष्चात्य षिक्षा की बाहरी आधुनिकता द्वारा सुषिक्षा तब तक नहीं मिल सकती जब तक उसके साथ आध्यात्मिक प्रेरणा नहीं जुड़ जाए। उनकी आध्यात्मिकता का अर्थ पूजा–गृह में बैठकर पूजा करना नहीं था बल्कि अपने अंदर ईष्वर की षक्ति को अनुभव करना था।

स्वामीजी ने नारी–समाज के प्रसंग में बोलते हुए कई बार यह स्पष्ट किया है कि भारत में नारी का आदर्ष मातृत्व है जबकि पष्चिमी देषों में नारी–समाज का आदर्ष है पत्नीत्व।[2] भारत में किसी भी उम्र की स्त्री को ' माँ ' कहकर पुकारा जाता है जबकि पष्चिमी देषों में ' माँ ' षब्द का प्रयोग केवल वृद्वाओं के लिए किया जाता है। स्वामीजी ने यह बात अमरीका में अपने एक प्रवचन में कही थी। भारतीय आदर्ष के मूल में नारी को सम्मान देने की भावना है। स्वामीजी ने कहा था कि मनुष्य को जन्म लेते ही माँ के प्रति स्वयं को बलिदान करने की भावना रखनी चाहिए। वैदिक युग में स्त्रियों को

पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त थे। गार्गी, मैत्रेयी, सीता, सावित्री, दमयन्ती इत्यादि को स्वामीजी भारतीय नारी का आदर्ष रूप मानते थे। स्मृतियों और पुराणों के युग में भी भारतीय नारी की महिमा घोषित हुई थी। इस समय नारी को सम्मान देने हेतु यह श्लोक रचा गया– ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्तेः रमन्ते तत्र देवताः'' अर्थात् जहाँ नारी को पूजा जाता है, वहाँ देवता का वास होता है। बाद के समय में नारी की स्थिति दयनीय होने लगी। इस समय धर्म का भय एवं स्वर्ग का प्रलोभन दिखाकर उसे अदृष्य बेड़ियों में जकड़ने, पति की चिता में सती होने को बाध्य करने में समाज के विधाताओं ने थोड़ा भी संकोच नहीं किया। 18 वीं और 19 वीं शताब्दी में स्त्रियों की दषा अत्यन्त दयनीय हो गई थी। मनुष्य का जन्मगत अधिकार –षिक्षा और स्वाधीनता से नारी को पूर्णरूपेण वंचित कर दिया गया जबकि सांसारिक नियमों के अनुसार उन्हें जीवन निर्वाह करना था। स्वामीजी ने भारतीय नारी की ऐसी दषा के कारणों पर गंभीर विवेचन किया। उन्होंने देखा कि यह स्थिति केवल भारत में ही नहीं बल्कि कई अन्य पूर्वी एवं पष्चिमी देषों में भी थी। स्वामीजी हर देष की समस्या को राष्ट्रीय स्तर पर हल करने की आवष्यकता समझते थे। स्वामीजी का मानना था कि सांसारिक विषयों के साथ आध्यात्मिकता का समन्वय करके इस समस्या का समाधान सहज ही किया जा सकता है।

स्वामीजी चाहते थे कि स्त्री अपने बलबूते पर प्रतिष्ठा–अर्जन करे। केवल पुरूषों की बराबरी की प्रतियोगिता से स्त्रियों को यथोचित सम्मान की प्राप्ति नहीं होगी। उनका कहना था कि समाज की उन्नति में स्त्री और पुरुष दोनों की आवष्यकता है। उनका यह भी कहना था कि यह समाज एक पक्षी के शरीर के सम्मान है, जिसके स्त्री और पुरुषरूपी दोनों ओर पंख है। जिस तरह पक्षी अपने दोनों पंखों को एक साथ फैलाए बिना उड़ नहीं सकता उसी तरह यह समाज स्त्री एवं पुरुष, दोनों की भागीदारी के बिना उन्नत नहीं हो सकता। उन्होंने यह स्मरण दिलाया है कि हमारे व्यावहारिक या आध्यात्मिक क्षेत्र में पुरुष और नारी में कोई भेद नहीं माना गया है। उपनिषद में कहा गया है–''त्वं स्त्री त्वं पुमानसि त्वं कुमार उत वा कुमारी '' अर्थात् तुम ही स्त्री तुम ही पुरुष हो तुम ही कुमार और तुम ही कुमारी कन्या हो। स्वामीजी ने यह भी कहा था कि ''आत्मा में क्या कभी लिंगभेद होता है? स्त्री और पुरुष के भेद को दूर हटाओ , सब केवल आत्मा है।

स्वामीजी नारीसमाज की दुर्दषा देखकर बहुत आहत होते थे। आहत हृदय से उन्होंने कहा था कि ''युग–युग से यहाँ जिस तरह ईष्वर के मूर्तिस्वरूप मनुष्य को बोझ दोनेवाले गधे की तरह जीवन जीना पड़ रहा है उसी तरह भगर्वती की प्रतिमास्वरूप नारी को संतान देनेवाली दासीस्वरूप बनाकर उसका जीवन विषतुल्य कर दिया गया हैं स्वामीजी इस समस्या के समाधान का मुख्य उपाय षिक्षा को ही मानते थे। वे चाहते थे कि नारी षिक्षित होकर स्वाबलम्बी बने और अपने सम्मान में वृद्धि करे। वे कहते थे कि स्त्रियों को षिक्षा प्रदान करके अपना निर्णय स्वयं लेने का अधिकार देना चाहिए। वे खुद तय करने में सक्षम है कि उन्हें किस प्रकार के संस्कार धारण करना चाहिए और कैसे इस जीवन को सफल–सार्थक करना चाहिए ।

स्वामीजी ने इस युग की नारी–जाति को एक उच्चस्तरीय नवजीवन का पथ दिखाया था। जिस षिक्षा द्वारा चरित्र–निर्माण होता हैं ,वे नारी जाति में उसी षिक्षा की संस्थापना करना चाहते थे। पूर्वी देषों के धर्म और पष्चिमी देषों के विज्ञान के समन्वय को वे इस षिक्षा की नींव बनाना चाहते थे जिसमें नारी अपने दैनिक जीवन में विज्ञान की कर्मकुषलता को ग्रहण करे और साथ ही वह आध्यात्मिक चिन्तन और माधुर्य के पथ का भी अवलम्बन करे। हर नारी शक्तिरूपा हो, दृढ़ चरित्र की हो और साथ ही उसके हृदय में कोमलता भी हो। उनके शब्दों में ''माँ का हृदय और वीर का संकल्प (Mother's

heart and hero's will) ये दोनों ही नारी के जीवन की संपदा होगी। नवयुग की नारी का ऐसा रूप ही स्वामीजी देखना चाहते थे। स्वामीजी की विचारधारा आज भी समान रूप में प्रासंगिक है। उनके दिखाए पथ पर चलने से समग्र रूप में नारीजाति की हर समस्या का समाधान संभव है।

Keywords

1. स्वामीजी विवेकानंद 2. समाज–सुधार 3. सुषिक्षा 4. आध्यात्मिक 5. विज्ञान

References

1. Swami Vivekananda, Bani o Rachana 5th khamd, Page-77
2. Swami Vivekananda, Bani o Rachana 5th khamd, Page-335
3. Upnishad granthavali, Pratham khand, Udlodhan, 1404(1997) Page-399
4. Swami Vivekananda, Bani o Rachana, 7th khand, Page-5
5. Swami Vivekananda, Bani o Rachana, 6th khand, page-287